प्रा.डॉ.सौ.शशिप्रभा जैन
एम.ए.(हिन्दी), एम.ए.(समाजशास्त्र)
पीएच.डी.
महावीर महाविद्यालय,कोल्हापुर ।

प्र मा ण प त्र

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि श्री दिनेश बालकृष्ण डांगे ने मेरे निर्देशन में यह शोध प्रबन्ध एम.फिल्. उपाधि के लिए लिखा है । पूर्व योजनानुसार यह कार्य सम्पन्न हुआ है । जो तथ्य इस प्रबन्ध में प्रस्तुत किये गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही है ।

निर्देशिका,
हिन्दी विभाग,
महावीर महाविद्यालय,कोल्हापुर

स्थल : कोल्हापुर ।
दिनांक : 30 : 4 : १९९० ।

••

प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि प्रा.डॉ.सौ.शशिप्रभा जैन जी के निर्देशन में मैंने यह शोध प्रबन्ध एम्.फिल्. उपाधि के लिए लिखा है। इस प्रबन्ध में प्रस्तुत की गई सभी बातें मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं।

दिनेश बाळकृष्ण डांगे

स्थल: कोल्हापुर।
दिनांक : ३०:४:१९९०।

••

अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	पृष्ठ संख्या
	भूमिका	1-7
१. प्रथम अध्याय	नायिका-स्वरूप, विकास एवं प्रकार	8-33
	१) नायिका से तात्पर्य	
	२) नायिकाओं का प्राचीन स्वरूप	
	३) नायिकाओं का अर्वाचीन स्वरूप	
२. द्वितीय अध्याय	शिवानी की कहानियों का संक्षिप्त परिचय	34-71
३. तृतीय अध्याय	शिवानी की कहानियों में नायिकाओं के विभिन्न रूप	72-153
	अ) प्राचीन दृष्टिकोण के अनुसार शिवानी की कहानियों में नायिकाओं के विभिन्न रूप	
	ब) अर्वाचीन दृष्टिकोण के अनुसार शिवानी की कहानियों की नायिकाओं के विभिन्न रूप	
४. चतुर्थ अध्याय	शिवानी की नायिकाओं की विभिन्न समस्याएँ	154-176
	त) अशिक्षा, अंधविश्वास, रूढ़िवाद की समस्याएँ	
	थ) विवाह विषयक समस्याएँ -- अनमेल विवाह, प्रेमविवाह, पुनर्विवाह, अवंध मातृत्व, भ्रूण हत्या, विवाह विच्छेद, विधवाओं की समस्याएँ	
	द) निर्धनता, आभूषण प्रियता, दहेज की समस्याएँ	
	ध) पारिवारिक, दाम्पत्य जीवन की समस्याएँ	
	न) कुरूपता, सौंदर्य की समस्याएँ	
	च) प्रौढ़ कुमारिकाओं की समस्याएँ।	
५. पंचम अध्याय	उपसंहार	177-182
	संदर्भ सूची	
	१) आधार ग्रंथ	183-185
	२) संदर्भ ग्रंथ ।	

भूमिका

हिन्दी के समसामयिक कहानीकारों में शिवानी बहुत लोकप्रिय हैं। शिवानी ने कुमाऊं के पर्वतीय अंचल के यथार्थ चित्र पूर्ण मनोयोग, लगन और आस्था से प्रस्तुत किए हैं और यह उनकी लेखन की विशेषता है कि उन्होंने दूर दूर के पर्वतीय अंचलों को अपने साहित्य के माध्यम से सभी को परिचित कराने का महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने अपनी कलम की सशक्तता को सिद्ध कर दिया है। उनकी कृतियों में हर पृष्ठ पर जिज्ञासा का एक अटूट सिलसिला रहता है, जो कहानी के खत्म होने तक टूट नहीं पाता।

वे एक ऐसी लेखिका हैं जिन्हें न तो वादों के घेरे में बांधा जा सकता है, और न जिनकी उपेक्षा ही की जा सकती है। सच तो यह है कि शिवानी, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी साहित्य की एक सशक्त और लोकप्रिय लेखिका हैं। शिवानी ने विशेषकर नारी-जीवन को ही अपनी कहानियों का विषय बनाया है। शिवानी एक बहुज्ञ और बहुश्रुत लेखिका हैं यही कारण है कि उनकी कहानियों का वातावरण तथा पात्र सजीव और वैविध्यपूर्ण हैं।

शिवानी का पूरा नाम है श्रीमती गौरा पन्त शिवानी। आप कुमाऊं की रहनेवाली हैं। इन दिनों लखनऊ में रहती हैं। आपका जन्म सन १९२३ में राजकोट नामक एक भूतपूर्व रियासत में हुआ था, जहाँ आपके पिताजी एक उच्च पदाधिकारी थे। आपका विवाह भी एक उच्च पदाधिकारी से हुआ था। कुछ वर्षों पूर्व पति का देहान्त हो गया। पुत्री मृणाल पाण्डे भी हिन्दी की उभरती हुई कथा-लेखिका हैं।

स्वयं स्व.जैनेन्द्र जी ने आप की कहानी `करिए छिमा` पढकर मुक्त कंठ से आप की प्रशंसा की थी। सौभाग्यवश मुझे भी गतवर्ष वही कहानी पढने का मौका मिला। मैंने उसी क्षण अपने लघु शोध प्रबन्ध का विषय निश्चित किया - `शिवानी की कहानियों मे नायिकाओं का स्वरूप।`

जब मैंने इस विषय का प्रस्ताव श्रद्धेय गुरुवर्या प्रा.डॉ.सौ.शा...

जैन जी के सम्मुख रखा तो आपने स्वीकृति दे दी तथा विषय की गहराई के प्रति मुझे सचेत भी किया ।

शिवानी साहित्य पर कुमारी शशिबाला पंजाबी का "शिवानी के उपन्यासों का रचना विधान" शोध प्रबन्ध प्रकाशित हुआ है । शिवानी की कहानियों में नायिकाओं के स्वरूप निर्धारण के सम्बन्ध में अब तक अनुसंधान नहीं हुआ है । इसी वजह से उपर्युक्त विषय को मैंने अनुसंधान के लिए चुना है ।

हिन्दी की इस महान लेखिका पर शीघ्र ही अनेक समीक्षाएँ लिखी जायेंगी बडे-बडे शोध प्रबन्ध भी प्रकाशित होंगे । प्रस्तुत लघु प्रबन्ध इस दिशा में एक छोटा-सा कदम है ।

लघु-प्रबन्ध में शिवानी की अठ्ठावन कहानियों का समग्र अध्ययन करके नायिकाओं के बारे में आवश्यक विविध जानकारी का संकलन करके मैंने उनका विश्लेषण किया है, अंत में जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं वे उपसंहार में दिए हैं ।

अनुसन्धान के प्रारम्भ में मेरे मन में निम्न प्रश्न और मुद्दे थे ।

(१) नायिका से तात्पर्य क्या है ?

(२) नायिकाओं का प्राचीन स्वरूप कैसा था ?

(३) नायिकाओं का आधुनिक स्वरूप से किस तरह भिन्न है ?

(४) नायिकाओं के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए शिवानी की कहानियों का समग्र अध्ययन करना ।

(५) अ) नायिकाओं के प्राचीन स्वरूप के अनुसार शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का स्वरूप ज्ञात करना तथा उनका वर्गीकरण करना ।

ब) नायिकाओं के आधुनिक स्वरूप के अनुसार शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का स्वरूप ज्ञात करना । तथा उनका वर्गीकरण करना ।

(६) शिवानी की कहानियों में नायिकाओं की विविध समस्याओंका संकलन करके नायिकाओं का स्वरूप समझाने का प्रयास करना ।

इन प्रश्नों और मुद्दों की सहायता से मैंने `शिवानी की कहानियों में नायिकाओं का स्वरूप ` विषय पर अनुसंधान करने की कोशिश की है ।

प्रस्तुत लघु-प्रबन्ध मैंने पाँच अध्यायों में विभाजित किया है ।

अध्याय पहला --

नायिका - स्वरूप, विकास एवं प्रकार ।

१) नायिका से तात्पर्य ,

२) नायिकाओं का प्राचीन स्वरूप

त) कामशास्त्र के अनुसार नायिका के शारीरिक सौन्दर्य सम्बन्धी बत्तीस लक्षण

द) भरत के अनुसार नायिकाओं का वर्गीकरण

ध) नायिका-भेद निरूपण ग्रन्थों की परम्परा

न) नायिका-भेद का मनोवैज्ञानिक आधार

प) नायिका-भेद का मूल्यांकन

३) नायिकाओं का अर्वाचीन (आधुनिक) स्वरूप

य) हिन्दी कहानियों में नायिकाओं की परिकल्पना

र) हिन्दी उपन्यासों में नायिकाओं की परिकल्पना

ल) हिन्दी नाटकों में नायिकाओं की परिकल्पना

अध्याय दूसरा --

` शिवानी की कहानियों का संक्षिप्त परिचय ।

अपराधिनी, गैंडा, कैंजा, किशनुली, कृष्णवेणी, माणिक, मेरी प्रिय कहानियाँ, पूतोंवाली, पुष्पहार, रथ्या, रतिविलाप, विषकन्या और स्वयंसिद्धा। इन तेरह पुस्तकों से प्राप्त कुल अट्ठावन कहानियों का संक्षिप्त परिचय ।

अध्याय तीसरा --

` शिवानी की कहानियों में नायिकाओं के विभिन्न रूप ।`

अ) प्राचीन दृष्टिकोण के अनुसार शिवानी की कहानियों की नायिकाओं के विभिन्न रूप --

१) जाति के अनुसार शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का वर्गीकरण

२) कर्म के अनुसार शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का वर्गीकरण

३) पति प्रेम के अनुसार शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का वर्गीकरण

४) प्रकृति । गुण के अनुसार शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का वर्गीकरण

५) वय के अनुसार शिवानी की कहानियों की नायिकाओंका वर्गीकरण

६) दशा के अनुसार शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का वर्गीकरण

७) काल के अनुसार शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का वर्गीकरण

ब) अर्वाचीन (आधुनिक) दृष्टिकोण के अनुसार शिवानी की कहानियों की नायिकाओं के विभिन्न रूप --

ब : (१) अवासनात्मक दृष्टिकोण से

शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का वर्गीकरण

१) दादी २) माता ३) पुत्री ४) भगिनी

ब: (२) वासनात्मक दृष्टिकोण से

शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का वर्गीकरण

ब: (३) अन्य नायिकाएँ ---

१) प्रेमिकाएँ २) गृहस्थ नायिकाएँ

१) विधवा २) पतिता, वेश्या, बलात्कारिता

३) शार्विक, ठगिनी, डकैत

४) हत्यारिन । खूनी नायिकाएँ ५) महत्वाकांक्षिणी नायिकाएँ

अध्याय चौथा

' शिवानी की नायिकाओं की विभिन्न समस्याएँ '

त) अशिक्षा, धार्मिक अंधविश्वास, रूढिवाद और परम्परावाद की समस्याएँ ।

थ) विवाह विषयक समस्याएँ -- अनमेल विवाह, प्रेमविवाह, पुनर्विवाह, अवैध मातृत्व, भ्रूण हत्या, विवाह विच्छेद, विधवाओं की समस्याएँ ।

द) निर्धनता, आभूषण प्रियता दहेज, की समस्याएँ ।

ध) पारिवारिक, दाम्पत्य जीवन की समस्याएँ ।

न) कुरूपता, सौन्दर्य की समस्याएँ ।

प) प्रौढ कुमारिकाओं की समस्याएँ ।

पांचवे अध्याय में उपसंहार तथा अंत में ग्रंथ सूचि दी है ।

दिनांक : ३०|८|१९९०
कोल्हापुर ।

(दिनेश बा. डांगे)

••

ऋण - निर्देश

शिवानी की एक कहानी पढकर प्रस्तुत लघु-प्रबन्ध की प्रेरणा तो मेरे अंदर निर्माण हुई, परंतु इस प्रेरणा बीज को खिलकर पूर्ण विकसित कर लहरा देने का श्रेय महावीर कॉलेज, कोल्हापुर के मेरे गुरुवर्य श्रद्धेय प्रा.डॉ.सौ. शशिप्रभा जैन जी को जाता है। लघु-प्रबंध के विषय निर्धारण और उसकी पूर्ति में उनका जो आत्मिय मार्गदर्शन मिला है वह अविस्मरणीय है। शिवानी साहित्य के प्रति उनकी अत्यंतिक रुचि ने ही मुझसे यह कार्य सुगमतापूर्वक संपन्न करवाया है। उनसे प्राप्त स्नेह और मार्गदर्शन के लिए मैं उनका अत्यंत कृतज्ञ एवं ऋणी हूँ।

इस लघु-प्रबंध का कार्य करते समय मेरे महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. वि.डी. काम्बले जी, जवाहरनगर हाईस्कूल कोल्हापुर के भूतपूर्व प्रधानाध्यापक श्री. जे.डी. कावडे जी तथा विद्यमान प्रधानाध्यापक श्री.बी.पी.काम्बले जी ने यथासम्भव मेरी सहायता की उनका मैं हार्दिक आभारी हूँ।

महावीर कॉलेज, कोल्हापुर के प्राचार्य डॉ.बी.बी.पाटील जी का भी समय समय पर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, उनके प्रति भी कृतज्ञ हूँ।

मेरे महाविद्यालय की हिंदी विभागाध्यक्षा डॉ.रजनी भागवत जी तथा प्रा.एम.के.तिवले जी ने शुरुवात से आखिर तक मेरा हौसला बढाया है उनका मैं शतशः आभारी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर,महावीर कॉलेज, कोल्हापुर तथा श्री शाहाजी छत्रपति महाविद्यालय कोल्हापुर के ग्रंथालयों से मुझे अतीव सहायता मिली है। मैं उन ग्रंथपालों के प्रति हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता हूँ।

अन्त में मैं उन सभी ग्रंथ लेखकों एवं मित्रों का आभारी हूँ जिन्होंने परोक्ष अपरोक्ष सहयोग देकर इस लघु-प्रबन्ध की पूर्णता सिद्ध की है।

अन्त में टंकलेखक श्री बाळकृष्ण रा.सावन्त,कोल्हापुर इनका भी मैं आभारी हूँ । आपने प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध को अंतिम रूप देने में सहायता की ।

(दिनेश बा.डांगे)

कोल्हापुर ।
दिनांक : २०:४: १९९० ।

••